© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 03 , Issue : 07 | October- December 2017

आधुनिक कृषि एवं मौसम विज्ञान में महाकवि घाघ की कहावतों की प्रासंगिकता

अनीता, प्राथमिक शिक्षिका, हरिजन बस्ती, जीन्द (हरियाणा)

मौसम की घटनाएं अनादि काल से ही पृथ्वी और उस पर रहने वाले जीवधारियों को प्रभावित करती हैं। ये घटनाएं वायुमंडल में उपस्थित जलवाष्प तथा वायुराशियों की गतिके कारण उत्पन्न होती हैं। इसलिये मौसम और जलवायु कीजानकारी की जरूरत प्राचीनतम कालों से थी। आदिकालमें लोग वर्षा, सूखा आदि को दैवी घटनाएं समझते थे औरअनुकूल मौसम के लिये प्रार्थना तथा अनुष्ठानों में आस्था रखते थे। यह दशा एक शताब्दी पूर्व तक भी संसार के हरक्षेत्र में व्याप्त थी। प्राचीनकाल से ही मनुष्य मौसम के संबंधमें पूर्वानुमान लगाता चला आ रहा है। इसके संबंध में समय-समय पर अनेक विद्वानों ने अपने ग्रंथों में वर्षा एवं मौसम के पूर्वानुमान के लिए अनेक सिद्धांत दिए हैं। वर्ष 3000 ई.पूर्व के उपनिषद् में मेघ निर्माण एवं वृष्टि तथा पृथ्वी का सूर्यकी परिक्रमा के कारण ऋतु परिवर्तन का वर्णन मिलता है।वराहमिहिर की 'वृहद्संहिता' में मौसम संबंधी जानकारियोंका भरपूर वर्णन है। कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' में वैज्ञानिकढंग से वर्षामान एवं देश की अर्थव्यवस्था में इसके योगदानका वर्णन है, कालिदास के 'मेघदूत' में मध्यभारत में मानसूनआगमन की तिथि तथा वृष्टि-मेघ के पथ दर्शाये हैं। ग्रंथों सेज्ञात है कि वर्षा का मूल कारण सूर्य है। अदित्यात् जायतेवृष्टि।(अर्थात सूर्य से तपन, तपन से ऊर्जा, ऊर्जा से वृष्टि,वृष्टि से हरियाली, हरियाली से खुशहाली।)

अथर्ववेद, वृहत्संहिता, मेघदूत आदि ग्रंथों मेंमहर्षि पाराशर, वराहमिहिर, कश्यप, गर्ग और कालिदासआदि विद्वानों ने समय-समय पर वर्षा एवं मौसम पूर्वानुमानके लिए अनेक सिद्धांत दिए हैं। वास्तव में प्राचीन मौसमविज्ञान जितना महत्वपूर्ण है उतना इसका विकास नहींहुआ। समय के साथ ज्ञान लुप्त होता गया, फलस्वरूपआज न इसका साहित्य उपलब्ध है और न ही ज्ञाता, लेकिनयदि प्राचीन विज्ञान के ज्ञान भंडार को खोज कर इसेआधुनिक मौसम विज्ञान की प्रणालियों के साथ मिलकरनिष्कर्ष निकाला जाए तो और अधिक सटीक मौसमपूर्वानुमान प्राप्त किये जा सकते हैं। नवीन भारत के पासभी विश्व के कुछ प्राचीनतम विज्ञान संबंधी प्रेक्षण उपलब्धहैं। आज के वैज्ञानिक युग में वर्षा के पूर्वानुमानों में 'वायुऔर दाब' की जो भूमिका है, प्राचीन वर्षा विज्ञान में ग्रहोंकी विभिन्न नक्षत्रों में स्थिति की उपयोगिता उससे भी कहींअधिक है। बारहवीं शताब्दी में नरपति जी ने यह स्पष्ट करदिया था कि ग्रहों की स्थिति ही स्थूल रूप से वर्षा कीअवधि एवं मात्रा निर्धारित करती है। उनके अनुसार ग्रहोंएवं नक्षत्रों के आधार पर वर्षा के पूर्वानुमान के लिये'सप्तनाड़ी चक्र' है।

प्रत्येक नाड़ी के विशेष गुण धर्म होते हैं और ये क्रमशःआंधी, तूफान, वायु, तामपान में बढ़ोत्तरी, बादलों का उठना,नमीयुक्त बादल, वर्षा एवं अत्यधिक वर्षा की सूचक है।प्रत्येक नाड़ी का एक स्थायी ग्रह होता है। शनि वायु प्रधानग्रह है। मंगल एवं सूर्य, उष्ण एवं शोषक ग्रह हैं। गुरु सौम्यएवं वर्षा में सहायक ग्रह है। शुक्र, बुध एवं चन्द्र जलीयप्रकृति के हैं और वर्षा की मात्रा निर्धारित करते हैं। चण्डानाड़ी में जाने पर ग्रह प्रचण्ड-वायु, आंधी तूफान चलाते हैं,वायु नाड़ी के नक्षत्रों में संचरण पर केवल तेज हवाएं चलतीहैं वर्षा नहीं होती और दहन नाड़ी में तापमान बढ़ाता है।शुभ ग्रहों (गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र) का सौम्य नाड़ियों मेंसंचरण प्रचुर वर्षा का सूचक है।

क्रमांक	नाम नाड़ी	नक्षत्र	स्वामी ग्रह
1.	चण्डा	कृतिका, विशाखा, अनुराधा, भरणी	शनि
2.	वायु	रोहिणी, स्वाति, ज्येष्ठा, अश्विनी	सूर्य
3.	दहन	मृगशिरा, चित्रा, मूला, रेवती	मंगल

4.	सौम्य	आर्द्रा, हस्त, पूर्वाषाढ़, उत्तराभाद्रपद	गुरु
5.	नीर	पुनर्वसु, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, पूर्वाभाद्रपद	शुक्र
6.	जल	पुष्पा, पूर्वा फाल्गुनी, अभिजीत, शतभिषा	बुध
7.	अमृत	अश्लेशा, मघा, श्रावण, धनिष्ठा	चन्द्र

अशुभ ग्रहों (सूर्य मंगल शनि) का सौम्यनाड़ियों में संचरण अवर्षक-कारक है। शुभ ग्रहों का सौम्यनाड़ियों में संचरण वर्षा को कम करता है और अशुभ ग्रहसौम्य नाड़ियों में अपनी प्रकृति के अनुसार फल देते हैं।कोई भी ग्रह जब अपनी नाड़ी के नक्षत्रों में होते हैं तो उसनाड़ी के गुणों में वृद्धि करता है। किसी भी नाड़ी में जितनेअधिक ग्रह होते हैं उस का प्रभाव उतना ही अधिकप्रवाहित होता है। ये प्राचीन विधियां अत्यंत सरल हैं औरइनमें किसी विशेष उपकरण की आवश्यकता नहीं होतीइसलिए इनका नियमित रूप से प्रेक्षण करना वर्षा विज्ञानकी दिनचर्या का भाग बन जाता है और पूछे जाने पर वहतुरन्त अमुक स्थान पर वर्षा के विषय में अपना पूर्वानुमानदेने में समर्थ होता है। वर्षा के अतिरिक्त भूकम्प व तूफानआदि प्राकृतिक आपदाओं के विषय में भी पूर्वानुमान देनेहेतु प्राचीन मौसम विज्ञान में सिद्धांत उपलब्ध हैं।

विज्ञान की प्रगति के साथ-साथ यह मालूमहुआ कि सूर्य के चारों ओर पृथ्वी का घूमना ही ऋतुपरिवर्तन का मुख्य कारण है। इसके लिये हमारे ऋषि-मुनियों ने विभिन्न प्राकृतिक तरीके अपनाकर जानने कीकोशिश की। सबसे पहले वराहमिहिर तथा इसके बादमहान कवि कालिदास ने मेघदूत की रचना की जिसमेंमौसम विज्ञान का अति सुंदर वर्णन किया है, जिसमेंविशेषकर मानसून के आगमन निगमन की बात की है। एकप्रसिद्ध महाकवि घाघ भड्डरी ने कहावतों के रूप में मानसूनका पूर्वानुमान लगाया है जिसमें वायु एवं मानसून का वर्षापर प्रभाव की चर्चा की है। इन लोगों का ज्ञान प्रणम्य औरश्लाघ्य है क्योंकि इन्होंने बिना किसी यंत्र के सहारे मौसमकी चाल पहचान ली और किसानो व सर्वसाधारण के लिएऐसी काम की बातें बतायीं जो आज के बड़े -बड़े वैज्ञानिकतक नहीं बता सकते। हम आधुनिकता की अंधी दौड़ मेंअपने घाघ-भड्डरी जैसे विद्वानों की बातों को पोंगापंथी या खयाली कयास समझ इनका उपहास कर रहे हैं लेकिन सच तो यह है कि ऐसे लोगों ने ही मौसम के अध्ययन, उसकीनब्ज पहचानने की आधारशिला रखी।कहते हैं कि किसानकी कोई स्त्री अपने पति को खेत पर खाना देने जा रही थीऔर साथ में उसका बच्चा था। बच्चे ने घर से निकलते वक्तपानी पीने की जिद की तो उसकी मां ने घाग भड्डरी कादोहा दोहरा दिया-उत्तर वायु चले मजबूता। खेतै पान पियाइबपूता। अर्थान है बेटे उत्तर की प्रचंड वायु बह रही है यह तोबारिश लायेगी ही , चलो खेत में ही पानी पिला दूंगी।

सम्राट अकबर के समकालीन घाघ एक अनुभवीकिसान और व्यावहारिक कृषि वैज्ञानिक थे। सदियों पहलेजब टीवी या रेडियो नहीं हुआ करते थे और न सरकारीमौसम विभाग, तब किसान-कवि घाघ की कहावतें खेतिहरसमाज का पथप्रदर्शन करती थी। खेती को उत्तम पेशामानने वाले घाघ की यह कहावत देखिए - 'उत्तम खेतीमध्यम बान, नीच चाकरी, भीख निदान।' घाघ के गहन कृषि-ज्ञान का परिचय उनकी कहावतों से मिलता है। माना जाताहै कि खेती और मौसम के बारे में कृषि वैज्ञानिकों कीभविष्यवाणियां झूठी साबित हो सकती है, घाघ की कहावतेंनहीं। घाघ की लिखी कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है, लेकिनउनकी वाणी कहावतों के रूप में लोक में बिखरी हुई है।उनकी कहावतों को अनेक लोगों ने संग्रहित किया है। इनमेंहिंदुस्तानी एकेडेमी द्वारा 1931 में प्रकाशित रामनरेशत्रिपाठी का 'घाघ और भड्डरी' अत्यंत महत्वपूर्ण संकलनहै। घाघ और भड्डरी की कहावतें नामक पुस्तक मेंदेवनारायण द्विवेदी लिखते हैं, "कुछ लोगों का मत है किघाघ का जन्म संवत् 1753 में कानपुर जिले में हुआ था।मिश्रबंधु ने इन्हें कान्यकुब्ज ब्राह्मण माना है, पर यह बातकेवल कल्पना-प्रसूत है। यह कब तक जीवित रहे, इसकाठीक-ठाक पता नहीं चलता।"

जिस प्रकार ग्राम्य समाज में 'इसुरी' अपनी 'फाग' के लिए,विसराम अपने 'बिरहों' के लिए प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार घाघअपनी कहावतों के लिए विख्यात हैं। मध्यकालीन अन्यकवियों की भांति घाघ का जीवनवृत्त भी अज्ञात है। विभिन्नविद्वानों ने उन्हें अपने-अपने क्षेत्र का निवासी सिद्ध करनेकी चेष्टा है।

हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में घाघ के सम्बन्ध मेंसर्वप्रथम 'शिवसिंह सरोज' में उल्लेख मिलता है। इसमें"कान्यकुब्ज अंतर्वेद वाले" कवि के रूप में उनकी चर्चा है।

1 आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने घाघ का केवल नामोल्लेखकिया है।
2 'हिन्दी शब्द सागर' के अनुसार "घाघ गोंडे के रहने वालेएक बड़े चतुर और अनुभवी व्यक्ति का नाम है जिसकीकही हुई बहुत सी कहावतें उत्तरी भारत में प्रसिद्ध हैं। खेती-बारी, ऋतु-काल तथा लग्न-मुहूर्त आदि के सम्बन्ध में इनकीविलक्षण उक्तियाँ किसान तथा साधारण लोग बहुत कहतेहैं।"

3 श्रीयुत पीर मुहम्मद यूनिस ने घाघ की कहावतों की भाषाके आधार पर उन्हें चम्पारन (बिहार) और मुजफ्फरपुरजिले की उत्तरी सीमा पर स्थित औरेयागढ़ अथवाबैरगनिया अथवा कुड़वा चैनपुर के समीप के किसी गाँव मेंउत्पन्न माना है।

4 राय बहादुर मुकुन्द लाल गुप्त 'विशारद' ने 'कृषिरत्नावली' में उन्हें कानपुर जिला अन्तर्गत किसी ग्राम कानिवासी ठहराया है।
5. श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह ने घाघ का जन्म छपरा जिलेमें माना है।

6. पं. राम नरेश त्रिपाठी ने 'कविता कौमुदी' भाग एक और'घाघ और भड्डरी' नामक पुस्तक में उन्हें कन्नौजका निवासी माना है।
7. घाघ की अधिकांश कहावतों की भाषा भोजपुरी है। डॉ.ग्रियर्सन ने भी 'पीजेन्ट लाइफ आफ बिहार' में घाघ कीकविताओं का भोजपुरी पाठ प्रस्तुत किया है।
इस आधार पर इस धारणा को बल मिलता है कि घाघ काजन्म स्थान बिहार का छपरा था। वहां से ये कन्नौज गये।कहा जाता है कि कन्नौज में घाघ की ससुराल थी। ऐसाअनुमान है कि घाघ जीविकोपार्जन के लिए छपरा छोड़करअपनी ससुराल कन्नौज गये होंगे और वहीं बस गये होंगे।

जन्म काल घाघ का जन्मकाल भी निर्विवाद नहीं है। शिवसिंह सेंगर ने उनकी स्थिति सं. 1753 वि. के उपरान्तमाना है। इसी आधार पर मिश्रबन्धुओं ने उनका जन्म सं. 1753 वि.और कविता काल सं. 1780 वि. माना है। 'भारतीय चरिताम्बुधि' में इनका जन्म सन् 1696 ई. बतायाजाता है। पं. राम नरेश त्रिपाठी ने घाघ का जन्म सं. 1753 वि. मानाहै। यही मत आज सर्वाधिक मान्य है।

घाघ के नाम के विषय में भी निश्चित रूप से कुछ ज्ञात नहींहै। घाघ उनका मूल नाम था या उपनाम था इसका पता नहींचलता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी क्षेत्र-बिहार, बंगाल एवं असमप्रदेश में डाक नामक कवि की कृषि सम्बन्धी कहावतेंमिलती हैं जिनके आधार पर विद्वानों का अनुमान है किडाक और घाघ एक ही थे। घाघ की जाति के विषय में भीविद्वानों में मतभेद है। कतिपय विद्वानों ने इन्हें 'ग्वाला' मानाहै।
किन्तु श्री रामनरेश त्रिपाठी ने अपनी खोज के आधार परइन्हें ब्राह्मण (देवकली दुबे) माना है। उनके अनुसार घाघकन्नौज के चौधरी सराय के निवासी थे। कहा जाता है किघाघ हुमायूँ के दरबार में भी गये थे। हुमायूँ के बाद उनकासम्बन्ध अकबर से भी रहा। अकबर गुणज्ञ था और विभिन्नक्षेत्रों के लब्धप्रतिष्ठ विद्वानों का सम्मान करता था। घाघकी प्रतिभा से अकबर भी प्रभावित हुआ था और उपहारस्वरूप उसने उन्हें प्रचुर धनराशि और कन्नौज के पास कीभूमि दी थी, जिस पर उन्होंने गाँव बसाया था जिसका नामरखा 'अकबराबाद सराय घाघ'। सरकारी कागजों में आजभी उस गाँव का नाम 'सराय घाघ' है। यह कन्नौज स्टेशन सेलगभग एक मील पश्चिम में है। अकबर ने घाघ को 'चौधरी'की भी उपाधि दी थी। इसीलिए घाघ के कुटुम्बी अभी तकअपने को चौधरी कहते हैं। 'सराय घाघ' का दूसरा नाम'चौधरी सराय' भी है।

घाघ की पत्नी का नाम किसी भी स्रोत से ज्ञात नहीं है किन्तुइनके दो पुत्र-मार्कण्डेय दुबे और धीरधर दुबे हुए। इन दोनोंपुत्रों के खानदान में दुबे लोगों के बीस पच्चीस घर अब उसीबस्ती में हैं। मार्कण्डेय के खानदान में बच्चूलाल दुबे, विष्णुस्वरूप दुबे तथा धीरधर दुबे के खानदान में रामचरण दुबेऔर कृष्ण दुबे वर्तमान हैं। ये लोग घाघ की सातवीं-आठवींपीढ़ी में अपने को बताते हैं।

ये लोग कभी दान नहीं लेते हैं।इनका कथन है कि घाघ अपने धार्मिक विश्वासों के बड़ेकट्टर थे और इसी कारण उनको अंत में मुगल दरबार सेहटना पड़ा था तथा उनकी जमीनदारी का अधिकांश भागजब्त हो गया था।

प्राचीन महापुरूषों की भांति घाघ के सम्बन्ध में भी अनेककिंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि घाघ बचपन सेही 'कृषि विषयक' समस्याओं के निदान में दक्ष थे। छोटीउम्र में ही उनकी प्रसिद्धि इतनी बढ़ गयी थी कि दूर-दूर सेलोग अपनी खेती सम्बन्धी समस्याओं को लेकर उनकासमाधान निकालने के लिए घाघ के पास आया करते थे।किंवदन्ती है कि एक व्यक्ति जिसके पास कृषि कार्य केलिए पर्याप्त भूमि थी किन्तु उसमें उपज इतनी कम होतीथी कि उसका परिवार भोजन के लिए दूसरों पर निर्भररहता था, घाघ की गुणज्ञता को सुनकर वह उनके पासआया। उस समय घाघ हमउम्र के बच्चों के साथ खेल रहेथे। जब उस व्यक्ति ने अपनी समस्या सुनाई तो घाघ सहजही बोल उठे-

आधा खेत बटैया देके, ऊँची दीह किआरी।
जो तोर लइका भूखे मरिहें, घघवे दीह गारी।।

कहा जाता है कि घाघ के कथनानुसार कार्य करने पर वहकिसान धन-धान्य से पूर्ण हो गया। घाघ के सम्बन्ध मेंजनश्रुति है कि उनकी अपनी पुत्रवधू से नहीं पटती थी।कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इसी कारण घाघ अपनामूल निवास छपरा छोड़कर कन्नौज चले गये थे। घाघ जोकहावतें कहते थे उनकी पुत्रवधू उसके विपरीत दूसरीकहावत बनाकर कहती थी। पं. राम नरेश त्रिपाठी ने घाघऔर उनकी पुत्रवधू की इस प्रकार नोंकझोंक से सम्बन्धितकतिपय कहावतें प्रस्तुत की हैं1 जो इस प्रकार हैं-

घाघ-
मुये चाम से चाम कटावै, भुइँ सँकरी माँ सोवै।
घाघ कहैं ये तीनों भकुवा उढ़रि जाइँ पै रोवै।।

1पुत्र वधू-
दाम देइ के चाम कटावै, नींद लागि जब सोवै।
काम के मारे उढ़रि गई जब समुझि आइ तब रोवै।।

घाघ -
तरून तिया होइ अँगने सोवै रन में चढ़ि के छत्री रोवै।
साँझे सतुवा करै बियारी घाघ मरै उनकर महतारी।।

पुत्रवधू -
पतिव्रता होइ अँगने सोवै बिना अन्न के छत्री रोवै।
भूख लागि जब करै बियारी मरै घाघ ही कै महतारी।।

घाघ –
बिन गौने ससुरारी जाय बिना माघ घिउ खींचरि खाय।
बिन वर्षा के पहनै पउवा घाघ कहैं ये तीनों कउवा।।

पुत्रवधू –
काम परे ससुरारी जाय मन चाहे घिउ खींचरि खाय।
करै जोग तो पहिरै पउवा कहै पतोहू घाघै कउवा।।

घाघ और लालबुझक्कड़ की परस्पर लागडाँट सम्बन्धीजनश्रुति भी लोक जीवन में प्रचलित है। कहा जाता है किघाघ का निवास स्थान गंगा नदी के एक किनारे था औरउसके ठीक दूसरी ओर लालबुझक्कड़ का गाँव था। घाघकी प्रसिद्धि से लालबुझक्कड़ को

ईर्ष्या होने लगी थी ओर वेभी लोगों की विभिन्न समस्याओं का अपने ढंग से निदानकरने लगे थे। लालबुझक्कड़ का मूल नाम लाल था लेकिनविभिन्न समस्याओं का अनुमान के आधार पर हल निकालनेके कारण लोग उन्हें 'बुझक्कड़' कहने लगे। घाघ औरलालबुझक्कड़ की परस्पर प्रतिद्वंद्विता की बात तर्कसंगतनहीं प्रतीत होती है क्योंकि घाघ का सम्बन्ध कहावतों से हैजबकि लालबुझक्कड़ का सम्बन्ध 'बुझौवल' से है।बुझौवल कहावत की ही भांति लोक प्रचलित काव्य विधाहै। लालबुझक्कड़ से सम्बन्धित जो भी बुझौवललोकजीवन में मिलती हैं वे तर्कहीन और हास्यास्पद हैं। एकउदाहरण प्रस्तुत हैं- एक बार उनके गाँव वालों को वर्षा केकारण गीली जमीन पर हाथी के पैरों के निशान दिखाईदिये। वे लोग उनके पास इसके बारे में जानने के लिए पहुँचेलालबुझक्कड़ मुस्कुराते हुए बोले-

लालबुझक्कड़ बूझते और न बूझै कोय।
पैर में चक्की बांध के हरिना कूदा होय।।

घाघ का समय हुमायूँ और अकबर का शासन काल था। पं.रामनरेश त्रिपाठी का अनुमान है कि अकबर केसिंहासनारूढ़ होने के समय घाघ की उम्र पचास से अधिकरही होगी। अकबर की राज्यारोहण तिथि 1556 ई. है। इसप्रकार घाघ की मृत्यु इसके बाद ही किसी समय हुई होगी।इनकी मृत्यु के बारे में जनश्रुति है कि घाघ ने ज्योतिष विद्याके आधार पर यह जान लिया था कि उनकी मृत्यु तालाब मेंनहाते समय होगी। इसीलिए घाघ कभी नदी या सरोवर मेंस्नान करने नहीं जाते थे। दैवयोग से एक दिन मित्रों केकहने पर उनके साथ तालाब में नहाने गये। वहाँ पानी मेंडुबकी लगाते समय उनकी चोटी जाठ (तालाब के बीच मेंगड़ा हुआ लकड़ी का लट्ठा) में फँस गई जिससे उनकी मृत्युहो गई।1 मरते समय उन्होंने कहा था-

जानत रहा घाघ निर्बुद्धि।
आवै काल विनासै बुद्धि।

भड्डरी का जीवन वृत
घाघ की तरह भड्डरी का जीवन वृत्त भी निर्विवाद नहीं है।भड्डरी कौन थे, किस प्रान्त के थे और किस भाषा में उन्होनेकहावतों का सृजन किया, यह आज भी विद्वानों में चर्चा काविषय है। भड्डरी के जन्म के सम्बन्ध में ग्रामीण अंचलों मेंअनेक किंवदन्तियाँ प्राप्त होती हैं। कुछ विद्वानों का माननाहै कि काशी में एक ज्योतिषी रहते थे। एक बार उन्होंनेज्योतिष गणना से यह देखा कि ऐसा शुभ मुहूर्त आने वालाहै जिसमें गर्भाधान होने पर बड़ा ही विद्वान और यशस्वीपुत्र पैदा होगा। ऐसा विचार कर ज्योतिषी ने काशी से अपनेपैतृक निवास के लिए प्रस्थान किया।

काशी से उनका घर काफी दूर था जिसकी वजह से विनिश्चित अवधि तक अपने घर नहीं पहुँच पाये और उन्हेंरास्ते में अहीर के घर रात बितानी पड़ी। अहीर की युवतीकन्या उनके लिए भोजन बनाने बैठी तो उनका उदास चेहरादेखकर पूछा कि आप इतने उदास क्यों हैं? ज्योतिषी जी नेकुछ इधर-उधर टालने के बाद सच्चाई से उसे अवगतकराया। उस युवती के मन में इस पुत्र को पाने की इच्छाजागृत हुई। उन दोनों की इच्छा का परिणाम भड्डरी के जन्मके रूप में हुआ। श्री वीएन मेहता ने अपनी पुस्तक 'युक्तप्रान्त की कृषि सम्बन्धित कहावतें' में इस कथा को थोड़ेपरिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार –"भड्डरीके विषय में ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर की एक बड़ी हीमनोहर कहानी कही जाती हैं।" एक समय, जब कि वे तीर्थ-यात्रा में थे, उनको मालूम हुआ कि अमुक दिन का उत्पन्नहुआ बच्चा गणित और फलित ज्योतिष का बहुत बड़ापण्डित होगा। उन्हों स्वयं ही ऐसे पुत्र के पिता होने कीउत्सुकता हुई और उन्होंने अपने घर उज्जैन के लिए प्रस्थानकिया परन्तु उज्जैन इतना दूर था कि वे उस शुभ-दिन तकवहां न पहुँच सके। अतएव रास्ते के एक गाँव में एकगड़रिये की कन्या से विवाह कर लिया। उस स्त्री से उनकोएक पुत्र हुआ जो ब्राह्मणों की भाँति शिक्षा न पाने पर भीस्वभावतः बहुत बड़ा ज्योतिषी हुआ। आज सभी नक्षत्र-संबंधी कहावतों के वक्ता भड्डरी या भड्डली कहे जाते हैं।"भड्डरी को वराहमिहिर का पुत्र मानना तर्कसंगत नहीं हैक्योंकि वराहमिहिर का समय 'पंचसिद्धान्तिका' के अनुसारशक 427 या सन् 505 ई. के लगभग है। भड्डरी कीकहावतों की भाषा उस युग की नहीं हो सकती, यह निश्चितहै।

उक्त कथाओं के परिप्रेक्ष्य में इतना स्पष्ट है कि भड्डरी काजन्म कुलीन जाति में नहीं हुआ था। भड्डरी नाम से भीउनके कुलीन

जाति का न होने का संकेत मिलता है।कतिपय विद्वानों ने भड्डरी का सम्बन्ध राजस्थान से जोड़ा हैक्योंकि राजस्थानी कहावतों में "डंग कहै हे भड्डली" उल्लेखबार-बार आता है। एक कथा के अनुसार मारवाड़ में भड्डलीनामक एक स्त्री थी जो ज्योतिषी थी। उसकी जाति आहिरया गड़रिया नहीं, भंगिन बताई गई है। यह भी कहा जाता हैकि मारवाड़ में 'डंक' नाम के ब्राह्मण कवि थे जिन्होंने इसभंगिन कन्या भड्डली से विवाह कर लिया था। इन दोनों कीसंतान 'डाकोत' कहलाई।

इन जनश्रुतियों के अतिरिक्त भड्डरी के सम्बन्ध में कोई ठोसआधार नहीं प्राप्त होता है, लेकिन इतना अनुमान लगायाजा सकता है कि भड्डरी और भड्डली दो अलग-अलग व्यक्तिएवं नाम हैं क्योंकि दोनों की कहावतों की भाषा में पर्याप्तअन्तर देखने को मिलता है। इसी प्रकार 'डंक' और 'डाक'के एक होने पर भी विचार किया जाये तो दोनों में काफीसमानता दृष्टिगत होती है। श्री दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह काअनुमान है कि बिहार के 'डाक' कवि ही राजस्थानी 'डंग' है।

भड्डरी से संबंधित एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि ये काशी केथे या मारवाड़ के? भड्डरी की कहावतों में भोजपुरी औरअवधी के शब्दों की प्रचुरता भी है। यदि इस दृष्टि से देखाजाय तो भड्डरी का काशी के आसपास का होना समीचीनप्रतीत होता है। मारवाड़ के भड्डली निश्चित ही इससे भिन्नप्रतीत होते हैं। वहाँ भड्डली और भड्डली नामक दो अलग-अलग कवि हुए हैं, जिसमें भड्डलि पुरुष हैं और भड्डली स्त्री।इस प्रकार अवधी क्षेत्र के भड्डरी से उन्हें किसी प्रकार भीसंबन्धित नहीं माना जा सकता। यह भी सम्भावना है किभड्डरी की प्रसिद्धि के कारण उनकी अवधी और भोजपुरीकहावतें राजस्थानी भाषा में गढ़ ली गई हों। मारवाड़ मेंभड्डली पुस्तक 'भड्डली पुराण' भी प्रसिद्ध है। पं. रामनरेशत्रिपाठी ने अपनी पुस्तक 'घाघ और भड्डरी' में इसकाउल्लेख किया है। "घाघ, भड्डरी और डाक को अलग-अलगमानने वालों में प्रसिद्ध विद्वान डॉ. ग्रियर्सन भी प्रमुख हैं।उन्होंने इन तीनों कवियों को अपनी पुस्तक 'बिहार पीजेंटलाइफ' में अलग-अलग स्थान दिया है।"

संस्कृत आलोचक श्रीरंग कहते हैं कि घाघ भृगुवंशी जोशीभड्डरी व्राहमण थे।उहें ज्योतष का ज्ञान पैतृक परंपरा सेमिला था क्योंकि वे भड्डर ऋषि की वंश परंपरा से थे।भड्डरऋषि के कृषि और मौसम विषयक मंत्र मेघमाला संस्कृतग्रंथ में मिलते हैं। घाघ ने उसे लोक भाषा में पुनः भड्डर केनाम से ही प्रस्तुत किया।अपनी कहावतें भी घाघ के नाम सेकी।इन कहावतों का प्रचार भड्डरी समाज के लोगों ने पूरेदेश में किया तथा उसे अपनी जीविका का आघार बताया।भड्डरी को गांव में जोशी, भड्डरी, भड़रिया, भटरी, भठरी, देशांतरी, जोतसी, जोतगी, पड़िया, डाकोत भी कहा जाता है।ये ग्रामीण कृषकों का मार्ग दर्शन करते थे बदले में उपज कापहला भाग प्राप्त करते थे। किसानों में से अधिकांश लोगोंके जेहन में कवि घाघ की कोई न कोई रचना उमड़तीघुमड़ती रहती हैं। घाघ ऐसे महाकवि और दृष्टा थे जिन्होंनेउस काल में मौसम के बारे में पूर्वानुमान लगाया जब विज्ञानका विकास ही नहीं हुआ था। तब लोगों के पास मौसम कोआंकने के लिए कोई उपकरण भी नहीं थे। घाघ कीपूर्वानुमान की क्षमता इतनी प्रखर थी कि लोग उनका लोहामानने लगे। उनकी दृष्टि अनुभवों से ही विकसित हुई थी।पहले तो लोगों ने उन्हें हल्के में लिया लेकिन जब उनकीभविष्यवाणियां सत्य साबित होने लगीं तो उनकेसमकालीन लोगों ने उस पर अमल शुरू कर दिया। सदियोंपहले मौसम के रुख के बारे में लगाए गए पूर्वानुमान कोवर्तमान के मौसम वैज्ञानिक भी काफी सटीक मानते हैं।उन्होंने अपनी भविष्यवाणियां दोहों के रूप में ही कीं। आजभी अधिकांश ग्रामीणों का यही मानना है कि भले ही मौसमवैज्ञानिकों के पूर्वानुमान फेल हो जाएं लेकिन जो बातें घाघने दोहों में कह दी हैं वे आज भी सटीक बैठती हैं।

एक लेखक गंगाप्रसाद शर्मा ने 'घाघ और भंडरी की कहावतें' नामक पुस्तक में बताया है कि घाघ अहीर थे। अपनीमातृभूमि के लोगों ने जब उनका उपहास उड़ाया तो वे धारानगरी चले गए। वहीं उनकी भेंट भंडरी नाम की गड़रियाजाति की युवती से हुई। मौसम संबंधी उसकी जानकारी सेवे बहुत प्रभावित हुए। उसी से विवाह कर लिया। बाद मेंस्वयं मौसम का गहन अध्ययन किया। साथ ही साथज्योतिष विद्या का भी गहन अध्ययन किया। उन्होंनेज्योतिष संबंधी जानकारी भी विस्तार से लोगों को भी दी।

घाघ कृषि पंडित एवं व्यावहारिक पुरुष थे। उनकानाम भारतवर्ष के, विशेषत: उत्तरी भारत के, कृषकों केजिह्वाग्र पर रहता है। चाहे बैल खरीदना हो या खेत जोतना,बीज बोना हो अथवा फसल काटना, घाघकी कहावतें उनका पथ प्रदर्शन करती हैं। ये कहावतेंमौखिक रूप में भारत भर में प्रचलित हैं। घाघ जी मौसमका अनुमान जीव जंतु के चाल ढाल से सहज और सटीकलगाया है । इनकी कहावतें सिर्फ वाग्विलास नहीं हैं, सदियोंके खेतिहर समाज के अनुभव का निचोड़ हैं। इस ज्ञान बगैरकिस्सी पूर्वाग्रह के

विज्ञान के साथ जोड़ने की जरूरत है ।घाघ के कृषिज्ञान का पूरा-पूरा परिचय उनकी कहावतों सेमिलता है। उनका यह ज्ञान खादों के विभिन्न रूपों, गहरीजोत, मेंड़ बाँधने, फसलों के बोने के समय, बीज की मात्रा,दालों की खेती के महत्व एवं ज्योतिष ज्ञान, शीर्षकों केअंतर्गत विभाजित किया जा सकता है। खादों के संबंध मेंघाघ के विचार अत्यंत पुष्ट थे। उन्होंने गोबर, कूड़ा, हड्डी,नील, सनई, आदि की खादों को कृषि में प्रयुक्त किए जानेके लिये वैसा ही सराहनीय प्रयास किया जैसा कि 1840 ई.के आसपास जर्मनी के सप्रसिद्ध वैज्ञानिक लिबिग ने यूरोप में कृत्रिम उर्वरकों के संबंध में किया था। घाघ कीनिम्नलिखित कहावतें अत्यंत सारगर्भित हैं

1. खाद पड़े तो खेत,
   नहीं तो कूड़ा रेत।
2. गोबर राखी पाती सड़ै,
   फिर खेती में दाना पड़ै।
3. सन के डंठल खेत छिटावै,
   तिनते लाभ चौगुनो पावै।
4. गोबर, मैला, नीम की खली,
   या से खेती दुनी फली।

5. वही किसानों में है पूरा,
   जो छोड़ै हड्डी का चूरा।

घाघ ने गहरी जुताई को सर्वश्रेष्ठ जुताई बताया। यदि खादछोड़कर गहरी जोत कर दी जाय तो खेती को बड़ा लाभपहुँचता है :

6. छोड़ै खाद जोत गहराई,
   फिर खेती का मजा दिखाई।

बांध न बाँधने से भूमि के आवश्यक तत्व घुल जाते औरउपज घट जाती है। इसलिये किसानों को चाहिए कि खेतोंमें बाँध अथवा मेंड़ बाँधे,

7. सौ की जोत पचासै जोतै,
   ऊँच के बाँधै बारी
   जो पचास का सौ न तुलै,
   देव घाघ को गारी।

घाघ ने फसलों के बोने का उचित काल एवं बीज की मात्राका भी निर्देश किया है। उनके अनुसार प्रति बीघे में पाँचपसेरी गेहूँ तथा जौ, छः पसेरी मटर, तीन पसेरी चना, दो सेरमोथी, अरहर और मास, तथा डेढ़ सेर कपास, बजरा बजरी,साँवाँ कोदों और अंजुली भर सरसों बोकर किसान दूनालाभ उठा सकते हैं। यही नहीं, उन्होंने बीज बोते समयबीजों के बीच की दूरी का भी उल्लेख किया है, जैसे घना-घना सन, मेंढ़क की छलांग पर ज्वार, पग पग पर बाजराऔर कपास; हिरन की छलाँग पर ककड़ी और पास पासईख को बोना चाहिए। कच्चे खेत को नहीं जोतना चाहिए,नहीं तो बीज में अंकुर नहीं आते। यदि खेत में ढेले हों, तोउन्हें तोड़ देना चाहिए। आजकल दालों की खेती पर विशेषबल दिया जाता है, क्योंकि उनसे खेतों में नाइट्रोजन कीवृद्धि होती है। घाघ ने सनई, नील, उड़द, मोथी आदि द्विदलोंको खेत में जोतकर खेतों की उर्वरता बढ़ाने का स्पष्टउल्लेख किया है। खेतों की उचित समय पर सिंचाई की ओरभी उनका ध्यान था। किस मास में किधर से हवा चले तोकितनी वर्षा हो, अथवा किस मास की वर्षा से खेती में कीड़ेलगेंगे, इसका अच्छा व्यावहारिक ज्ञान उन्हें था। आज भीकिसान उनकी ऐसी कहावतों से लाभान्वित होते हैं। बैल हीखेती का

मूलधार है, अत: घाघ ने बैलों के आवश्यक गुणोंका सविस्तार वर्णन किया है। हल तैयार करने के लियेआवश्यक लकड़ी एवं उसके परिमाण का भी उल्लेखउनकी कहावतों में मिलता है।

उपलब्ध कहावतों के आधार पर इतना अवश्य कहा जासकता है कि घाघ ने भारतीय कृषि को व्यावहारिक दृष्टिप्रदान की। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी और उनमें नेतृत्व कीक्षमता भी थी। उनके कृषि संबंधी ज्ञान से आज भीअनेकानेक किसान लाभ उठाते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से उनकीये समस्त कहावतें अत्यन्त सारगर्भित हैं। इसी तरह नवभारत टाइम्स पोर्टल में संजय के 'धरती के गोंद' नामकसंग्रह में घाघ भड्डरी की कहावतें छपी हैं।

1.कपड़ा पहिरै तीन बार।
बुध बृहस्पत सुक्रवार।
हारे अबरे इतवार।
भड्डर का है यही बिचार।।

अर्थात वस्त्र धारण करने के लिए बुध, बृहस्पति औरशुक्रवार का दिन विशेष शुभ होता है। अधिक आवश्यकतापड़ने पर रविवार को भी वस्त्र धारण किया जा सकता है,ऐसा भड्डरी का विचार है।

2.चलत समय नेउरा मिलि जाय।
बाम भाग चारा चखु खाय।।
काग दाहिने खेत सुहाय।
सफल मनोरथ समझहु भाय।।

अर्थात यदि कहीं जाते समय रास्ते में नेवला मिल जाए औरदाहिने ओर खेत में कौवा हो तो जिस कार्य से व्यक्तिनिकला है, वह अवश्य सिद्ध होगा।

3. पुरुब गुधूली पश्चिम प्रात।
उत्तर दुपहर दक्खिन रात।।
का करै भद्रा का दिगसूल।
कहैं भड्डर सब चकनाचूर।।

अर्थात भड्डरी कहते हैं कि यदि पूर्व दिशा में यात्रा करनी होतो गोधूलि (संध्या) के समय, यदि पश्चिम में यात्रा करनी होतो प्रात:काल, यदि उत्तर दिशा में यात्रा करनी हो तो दोपहरमें और यदि दक्षिण की ओर जाना है तो रात में निकलनाचाहिए। यदि उस दिन भद्रा या दिशाशूल भी है तो ऐसाकरने वाले व्यक्ति को कुछ भी नहीं होगा।

4. गवन समय जो स्वान।
फरफराय दे कान।
एक सूद्र दो बैस असार।
तीनि विप्र औ छत्री चार।।
सनमुख आवैं जो नौ नार।
कहैं भड्डरी असुभ विचार।।

अर्थात भड्डरी कहते हैं कि यात्रा पर निकलते समय यदि घरके बाहर कुत्ता कान फटफटा रहा हो तो अशुभ होता है।यदि सामने से
1 शूद्र, 2 वैश्य, 3 ब्राह्मण, 4 क्षत्रिय और 9स्त्रियां आ रही हों तो अशुभ होता है।

. भरणि बिसाखा कृत्तिका, आद्रा मघा मूल।
इनमें काटै कूकुरा, भड्डर है प्रतिकूल।।

अर्थात भड्डरी का कहना है कि यदि भरणी, विशाखा,कृत्तिका, आर्द्रा और मूल नक्षत्र में कुत्ता काट ले तो बहुतबुरा होता है।

दिशाशूल के बारे मे लिखते हैं कि:-

6. लोमा फिरि फिरि दरस दिखावे।
बायें ते दहिने मृग आवै।।
भड्डर जोसी सगुन बतावै।
सगरे काज सिद्ध होइ जावै।।

अर्थात यात्रा पर जाते समय यदि लोमड़ी बार-बार दिखाईपड़े, हिरण बाएं से दाहिने ओर निकल जाए तो व्यक्ति जिनकार्यों के लिए जा रहा होगा, वे सभी सिद्ध हो जाएंगे, ऐसाज्योतिषी भड्डरी कहते हैं।

7.सूके सोमे बुधे बाम।
यहि स्वर लंका जीते राम।।
जो स्वर चले सोई पग दीजै।
काहे क पण्डित पत्रा लीजै।।

अर्थात शुक्रवार, सोमवार और बुधवार को बाएं स्वर में कार्यप्रारंभ करने से सफलता मिलती है। राम ने इसी स्वर मेंलंका जीती थी। यदि बायां स्वर चले तो बायां पैर आगेनिकालना चाहिए। दाहिना चले तो दाहिना पैर आगेनिकालना चाहिए। इससे कार्य सिद्ध होता है। ऐसा करनेवाले व्यक्ति को पंचांग में विचार करने की आवश्यकता नहींहै।

8.सोम सनीचर पुरुब न चालू।
मंगल बुद्ध उत्तर दिसि कालू।
बिहफै दक्खिन करै पयाना।
नहि समुझें ताको घर आना।।
बूध कहै मैं बड़ा सयाना।
मोरे दिन जिन किहयौ पयाना।।
कौड़ी से नहिं भेट कराऊं।
छेम कुसल से घर पहुंचाऊं।।

अर्थात यदि यात्रा पर जाना हो तो सोमवार और शनिवारको पूर्व, मंगल और बुध को उत्तर दिशा में नहीं जानाचाहिए। यदि व्यक्ति बृहस्पति को दक्षिण दिशा की यात्राकरेगा तो उसका घर लौटना संदिग्ध होगा। बुधवार कहता हैकि मैं बहुत चतुर हूं, व्यक्ति को मेरे दिन कहीं भी यात्रा नहींकरनी चाहिए; क्योंकि मैं उसको एक कौड़ी से भी भेंट नहींहोने दूंगा। क्षेम-कुशल से उसको घर पहुंचा दूंगा।

इसी प्रकार ऐसी अनेक कहावतों से हमें जिन्दगी के विभिन्न पहलुओंका सटीक मार्गदर्शन मिलता है। घर के बुजुर्ग ऐसी अनेककहावतों से, समय-समय पर हमारा मार्गदर्शन करते रहतेहैं। कान्वेन्ट विद्यालयों में पढ़कर आयी नयी पीढ़ी इनकहावतों से अनभिज्ञ है, क्योंकि ये हिन्दी में है, हिन्दी में भीदेहाती भाषा में, जिसे वे आसानी से नहीं समझ पाते।

9. ज्यादा खाये जल्द मरि जाय,
सुखी रहे जो थोड़ा खाय।

रहे निरोगी जो कम खाये,
बिगरे काम न जो गम खाये।

10.चैते गुड़ बैसाखे तेल,
जेठ मे पंथ आषाढ़ में बेल।
सावन साग न भादों दही,
क्वारें दूध न कातिक मही।
मगह न जारा पूष घना,
माघेै मिश्री फागुन चना।

घाघ! कहते हैं, चैत (मार्च-अप्रेल) में गुड़, वैशाख (अप्रैल-मई) में तेल, जेठ (मई-जून) में यात्रा, आषाढ़ (जून-जौलाई)में बेल, सावन (जौलाई-अगस्त) में हरे साग, भादों (अगस्त-सितम्बर) में दही, क्वार (सितम्बर-अक्तूबर) में दूध, कार्तिक(अक्तूबर-नवम्बर) में मट्ठा, अगहन (नवम्बर-दिसम्बर) मेंजीरा, पूस (दिसम्बर-जनवरी) में धनियां, माघ (जनवरी-फरवरी) में मिश्री, फागुन (फरवरी-मार्च) में चने खानाहानिप्रद होता है।

11.जाको मारा चाहिए बिन मारे बिन घाव।
वाको यही बताइये घुँइया पूरी खाव।।

घाघ! कहते हैं, यदि किसी से शत्रुता हो तो उसे अरबी कीसब्जी व पूड़ी खाने की सलाह दो। इसके लगातार सेवन सेउसे कब्ज की बीमारी हो जायेगी और वह शीघ्र ही मरनेयोग्य हो जायेगा।

12. पहिले जागै पहिले सौवे,
जो वह सोचे वही होवै।

घाघ! कहते हैं, रात्रि मे जल्दी सोने से और प्रातःकाल जल्दीउठने से बुध्दि तीव्र होती है। यानि विचार शक्ति बढ़ जातीहैै।

13. प्रातःकाल खटिया से उठि के पिये तुरन्ते पानी।
वाके घर मा वैद ना आवे बात घाघ के जानी।।

भड्डरी! लिखते हैं, प्रातः काल उठते ही, जल पीकर शौचजाने वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक रहता है, उसे डाक्टर केपास जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

14. सावन हरैं भादों चीता,
क्वार मास गुड़ खाहू मीता।
कातिक मूली अगहन तेल,
पूस में करे दूध सो मेल
माघ मास घी खिचरी खाय,
फागुन उठि के प्रातः नहाय।
चैत मास में नीम सेवती,
बैसाखहि में खाय बसमती।

1 जैठ मास जो दिन में सोवे,
ताको जुर अषाढ़ में रोवे

भड्डरी! लिखते हैं, सावन में हरै का सेवन, भाद्रपद में चीताका सेवन, क्वार में गुड़, कार्तिक मास में मूली, अगहन मेंतेल, पूस में दूध, माघ में खिचड़ी, फाल्गुन में प्रातःकालस्नान, चैत में नीम, वैशाख में चावल खाने और जेठ केमहीने में दोपहर में सोने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है, उसे ज्वरनहीं आता।

15. बिन बैलन खेती करै, बिन भैयन के रार।
1 बिन महरारू घर करै, चौदह साख गंवार।।

भड्डरी! लिखते हैं, जो मनुष्य बिना बैलों के खेती करता है,बिना भाइयों के झगड़ा या कोर्ट कचहरी करता है और बिनास्त्री के गृहस्थी का सुख पाना चाहता है, वह वज्र मूर्ख है।

16. ताका भैंसा, गादर बैल,
नारि कुलच्छनि बालक छैल।
इनसे बांचे चातुर लौग,
राजहि त्याग करत हैं जौग।

घाघ! लिखते हैं, तिरछी दृष्टि से देखने वाला भैंसा, बैठनेवाला बैल, कुलक्षणी स्त्री और विलासी पुत्र दुखदाई हैं।चतुर मनुष्य राज्य त्याग कर संन्यास लेना पसन्द करते हैं,परन्तु इनके साथ रहना पसन्द नहीं करते।

17. जाकी छाती न एकौ बार,
उनसे सब रहियौ हुशियार।

घाघ! कहते हैं, जिस मनुष्य की छाती पर एक भी बाल नहींहो, उससे सावधान रहना चाहिए। क्योंकि वह कठोर हृदय,क्रोधी व कपटी हो सकता है।

"मुख-सामुद्रिक" के ग्रन्थ भी घाघ की उपरोक्त बात की पुष्टिकरते हैं।

18. जबहि तबहि डंडै करै,
ताल नहाय, ओस में परै।
दैव न मारै आपै मरैं।

भड्डरी! लिखते हैं, जो पुरूष कभी-कभी व्यायाम करता हैं,ताल में स्नान करता हैं और ओस में सोता है, उसे भगवाननहीं मरता, वह तो स्वयं मरने की तैयारी कर रहा है।

19. विप्र टहलुआ अजा धन और कन्या की बाढ़ि।
इतने से न धन घटे तो करैं बड़ेन सों रारि।।

घाघ! कहते हैं, ब्राह्मण को सेवक रखना, बकरियों का धन,अधिक कन्यायें उत्पन्न होने पर भी, यदि धन न घट सकें तोबड़े लोगों से झगड़ा मोल ले, धन अवश्य घट जायेगा।

20. सर्व तपै जो रोहिनी, सर्व तपै जो मूर।
परिवा तपै जो जेठ की, उपजै सातो तूर॥

अर्थ : रोहिणी भरपूर तपे और मूल भी पूरा तपे तथा जेठकी प्रतिपदा तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा होंगे.

21.कांटा बुरा करील का, औ बदरी का घाम।
सौत बुरी है चून को, और साझे का काम॥

अर्थ : करील का कांटा, बदली की धूप, सौत आटे की भी,और साझे का काम बुरा होता है.

22. दुश्मन की किरपा बुरी, भली मित्र की त्रास।
आडंगर गरमी करैं, जल बरसन की आस॥

अर्थ : शत्रु की दया की अपेक्षा मित्र की फटकार अच्छी है,जैसे गर्मी की अधिकता से कष्ट मिलता है, परन्तु जलबरसने की आशा होने लगती है.

23. खेती पाती बीनती, और घोड़े की तंग।
अपने हाथ संभारिये, लाख लोग हों संग॥

अर्थ : खेती, प्रार्थना पत्र, तथा घोड़े के तंग को अपने हाथ सेठीक करना चाहिए किसी दूसरे पर विश्वास नहीं करनाचाहिए.
24.औझा कमिया, वैद किसान।
आडू बैल और खेत मसान॥

अर्थ : नौकरी करने वाला औझा, खेती का काम करने वालावैद्य, बिना बधिया किया हुआ बैल और मरघट के पास काखेत हानिकारक है.

25. उत्तरा उत्तर दै गयी, हस्त गयो मुख मोरि।
भली विचारी चित्तरा, परजा लेइ बहोरि॥
अर्थ : उत्तरा और हथिया नक्षत्र में यदि पानी न भी बरसेऔर चित्रा में पानी बरस जाए तो उपज ठीक ठाक होगी.

26. अखै तीज तिथि के दिना, गुरु होवे संजूत।
तो भाखैं यों भड्डरी, उपजै नाज बहूत॥
अर्थ : यदि वैशाख में अक्षय तृतीया को गुरुवार पड़े तो खूबअन्न पैदा होगा.
27.नारि सुहागिन जल घट लावै,
दधि मछली जो सनमुख आवै।
सनमुख धेनु पिआवै बाछा,
यही सगुन हैं सबसे आछा॥

अर्थ : यदि सौभाग्यवती स्त्री पानी से भरा घड़ा ला रही हो,कोई सामने से दही और मछली ला रहा हो या गाय बछड़ेतो दूध पिला रही हो तो यह सबसे अच्छा शकुन होता है।

28. सोम सुक्र सुरगुरु दिवस, पौष अमावस होय।
घर घर बजे बधावनो, दुखी न दीखै कोय।।

यदि पूस की अमावस्या को सोमवार, शुक्रवार बृहस्पतिवारपड़े तो घर घर बधाई बजेगी-कोई दुखी न दिखाई पड़ेगा।

29. सावन पहिले पाख में, दसमी रोहिनी होय।
महंग नाज अरु स्वल्प जल, विरला विलसै कोय।।

यदि श्रावण कृष्ण पक्ष में दशमी तिथि को रोहिणी हो तोसमझ लेना चाहिए अनाज महंगा होगा और वर्षा स्वल्पहोगी, विरले ही लोग सुखी रहेंगे।

30. पूस मास दसमी अंधियारी।
बदली घोर होय अधिकारी।
सावन बदि दसमी के दिवसे।
भरे मेघ चारो दिसि बरसे।।

यदि पूस बदी दसमी को घनघोर घटा छायी हो तो सावनबदी दसमी को चारों दिशाओं में वर्षा होगी। कहीं कहीं इसेयों भी कहते -'काहे पंडित पढ़ि पढ़ि भरो, पूस अमावसकी सुधि करो।

31. पूस उजेली सप्तमी, अष्टमी नौमी जाज।
मेघ होय तो जान लो, अब सुभ होइहै काज।।

यदि पूस सुदी सप्तमी, अष्टमी और नवमी को बदली औरगर्जना हो तो सब काम सुफल होगा अर्थात् सुकाल होगा।

वर्षाऋतु में प्रारंभिक वर्षा के लिए पूर्व दिशा से आने वालीहवा की ही प्रतीक्षा की जाती है। महाकवि घाघ के खेती,सूखा, अतिवृष्टि, कृषि कार्य से जुड़े पशुओं की पहचानउनकी खोट, कृषि की फसलों की पैदावार कम या अधिकहोने के संबंध में तथा फसलों की बुआई, कटाई और मडाईके उचित समय के बारे में भी काफी संतोषजनक पूर्वानुमानकिए हैं।

घाघ की वर्षा संबंधी कहावतें:-

1.शुक्रवार की बादरी, रही सनीचर छाय।
तो यों भाखै भड्डरी, बिन बरसे ना जाए॥

अर्थ : शुक्रवार के बादल शनिवार को छाए रहें, तो भड्डरीकहते हैं कि वे बादल बिना बरसे नहीं जायेंगे.

2.सावन मास बहे पुरवइया।
बछवा बेच लेहु धेनु गइया॥

अर्थ : यदि सावन महीने में पुरवैया हवा बह रही हो तोअकाल पड़ने की संभावना है. किसानों को चाहिए कि वेअपने बैल बेच कर गाय खरीद लें.

3. रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ कुछ अद्रा जाय।
कहै घाघ सुन घाघिनी, स्वान भात नहीं खाय॥

अर्थ : यदि रोहिणी पूरा बरसे, मृगशीर्ष में तपन रहे औरआद्रा में साधारण वर्षा हो जाए तो धान की पैदावार इतनीअच्छी होगी कि कुत्ते भी भात नहीं खाएंगे.

4. पहिला पवन पूरब से आवै।
बरसै मेघ अन्न झरि लावै।।

अर्थ: जब वर्षा ऋतु में पहली पवन पूर्व दिशा से आए तो बादल बरसते हैं और अन्न की खूब पैदावार होती है।

5. लाल पियर होम अकास।
तब नहीं बरसा की आस।

जब आकाश लाल पीला हो तो वर्षा की आशा नहीं रहतीहै।

6. सब दिन बरसै दखिना बाय,

कभी न बरसै बरखा थाय।
वर्षा ऋतु में यदि दक्षिणी हवा चले तो वर्षा नहीं होगी।
7. दिन को बदर रात निबादर,
बहै पुरवाई झब्बर झब्बर।
दिन को बादल हो और रात में आकाश साफ रहे तो वर्षानहीं होगी।
महाकवि ने बताया कि चैत के महीने की एक बूंद कीबरसात के कारण सावन की हजारों बूंदों की हानि हो जातीहै।

8. दिन में गरमी रात को ओस,
कहे घाघ बरसा सो कोस।

जब दिन में गरमी पड़े रात में ओस भी पड़े, तो समझो वर्षानहीं होगी।
9. करिया बादल जिद्द देरवावै
भूरा बदल पानी लावै।

उन्होंने बताया कि काले बादल बरसाती नहीं होते, भूरेबादल बरसाती होते हैं।

10. उलटे गिरगिट ऊंचे चढ़ै।
बरखा होई भूइं जल बुड़ै।।
अर्थात यदि गिरगिट उलटा पेड़ पर चढ़े तो वर्षा इतनीअधिक होगी कि धरती पर जल ही जल दिखेगा।
1. कलशै पानी गरम हो चिड़िया नहावै धूर
चींटी लै अंडा चढ़ै तो बरखा भरपूर।
अर्थात् अगर मटके का पानी गर्म होने लगे, चिड़िया धूल (रेत) में नहा रही हो, चींटियाँ अपने अंडे उठाकर ऊपर की ओर चढ़ने लगें तो भरपूर वर्षा होती है।

12. सावन सुक्ला सप्तमी, जो गरजै अधिरात।
बरसै तो झुरा परै, नाहीं समौ सुकाल।।

यदि सावन सुदी सप्तमी को आधी रात के समय बादलगरजे और पानी बरसे तो झुरा पड़ेगा; न बरसे तो समयअच्छा बीतेगा।

13. असुनी नलिया अन्त विनासै।
गली रेवती जल को नासै।।
भरनी नासै तृनौ सहूतो।
कृतिका बरसै अन्त बहूतो।।

यदि चैत मास में अश्विनी नक्षत्र बरसे तो वर्षा ऋतु के अन्तमें झुरा पड़ेगा; रेतवी नक्षत्र बरसे तो वर्षा नाममात्र की होगी;भरणी नक्षत्र बरसे तो घास भी सूख जाएगी और कृतिकानक्षत्र बरसे तो अच्छी वर्षा होगी।

14. आसाढ़ी पूनो दिना, गाज बीजु बरसंत।
नासे लच्छन काल का, आनंद मानो सत।।

आषाढ़ की पूणिमा को यदि बादल गरजे, बिजली चमकेऔर पानी बरसे तो वह वर्ष बहुत सुखद बीतेगा।

15. उत्तर चमकै बीजली, पूरब बहै जु बाव। घाघ कहै सुनु घाघिनी, बरधा भीतर लाव।।

अर्थात यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो और पुरवाहवा बह रही हो तो घाघ अपनी स्त्री से कहते हैं कि बैलों कोघर के अंदर बांध लो, वर्षा शीघ्र होने वाली है।

बुआई संबंधी कहावतें:-

1.पुरुवा रोपे पूर किसान।
आधा खखड़ी आधा धान॥

अर्थ : पूर्वा नक्षत्र में धान रोपने पर आधा धान और आधाखखड़ी पैदा होता है ।

इसका मतलब यह है कि यदि कोई किसान पूर्वा नक्षत्र मेंधान की रोपाई कर देता है तो उसकी फसल की अच्छीपैदावार नहीं होगी। आधा फसल पैया यानी दानारहित होजाएगी। सही मायने में उसे आधा उत्पादन ही मिल पाएगा।

2. आद्रा में जौ बोवै साठी।
दु:खै मारि निकारै लाठी॥

अर्थ : जो किसान आद्रा नक्षत्र में धान बोता है वह दु:ख कोलाठी मारकर भगा देता है.

3. गहिर न जोतै बोवै धान।
सो घर कोठिला भरै किसान॥

अर्थ : गहरा न जोतकर धान बोने से उसकी पैदावार खूबहोती है।

4. जो हल जोते खेती वाकी
और नहीं तो जाकी ताकी।
उत्तम खेती जो हलगहा
मध्यम खेती जो संग रहा
बीज बूडिगे तिनके तहां
जो पूछिसि हरवहवा कहां।

इसका आशय यह है कि खेती उसकी उत्तम होगी जो स्वयंहल चलाएगा। जो हरवाहे के साथ-साथ रहेगा उसकी खेतीमध्यम होगी। लेकिन जो हरवाहे पर ही सारा भार डाल देगाउसका बीज भर उत्पादन भी वापस नहीं आएगा।

5. पंच दिवाकर माह में होवे भलै न चीन
काल हलाहल देखिए दुनिया तेरह तीन।

इसका अभिप्राय यह है कि फाल्गुन मास में पांच रविवारपड़े तो सभी प्रकार के अनाज महंगे होंगे। जनता महंगाई सेपरेशान रहेगी।

6. फागुन मास बहै पुरुवाई
तब गेहूं में गेरुई धाई।

यानी यदि फाल्गुन माह में पुरवा हवा चलती है तो गेहूं मेंगेरुई रोग लग जाएगा।

7 भादों की छठ चांदनी, जो अनुराधा होय।
ऊबड़ खाबड़ बोय दे, अन्न घनेरा होय।।

यदि भादो सुदी छठ को अनुराधा नक्षत्र पड़े तो ऊबड़-खाबड़ जमीन में भी उस दिन अन्न बो देने से बहुत पैदावारहोती है।

8. पुरुवा में जिनि रोपो भैया।
एक धान में सोलह पैया।।

पूर्वा नक्षत्र में धान न रोपो नहीं तो धान के एक पेड़ मेंसोलह पैया पैदा होगा।

9. कन्या धान मीनै जौ।
जहां चाहै तहंवै लौ।।

कन्या की संक्रान्ति होने पर धान (कुमारी) और मीन कीसंक्रान्ति होने पर जौ की फसल काटनी चाहिए।

10.कुलिहर भदई बोओ यार।
तब चिउरा की होय बहार।।

कुलिहर (पूस-माघ में जोते हुए) खेत में भादों में पकने वालाधान बोने से चिउड़े का आनन्द आता है-अर्थात् वह धानउपजता है।

11. आंक से कोदो, नीम जवा।
गाड़र गेहूं बेर चना।।

यदि मदार खूब फूलता है तो कोदो की फसल अच्छी है।नीम के पेड़ में अधिक फूल-फल लगते है तो जौ की फसल,यदि गाड़र (एक घास जिसे खस भी कहते हैं) की वृद्धिहोती है तो गेहूं बेर और चने की फसल अच्छी होती है।

12. आस-पास रबी बीच में खरीफ।
नोन-मिर्च डाल के, खा गया हरीफ।।

खरीफ की फसल के बीच में रबी की फसल अच्छी नहींहोती।

पैदावार संबंधी कहावतें:-

1. अद्रा भद्रा कृत्तिका, अद्र रेख जु मघाहि।
2. चंदा ऊगै दूज को सुख से नरा अघाहि।।

यदि द्वितीया का चन्द्रमा आर्द्रा नक्षत्र, कृत्तिका, श्लेषा यामघा में अथवा भद्रा में उगे तो मनुष्य सुखी रहेंगे।

2. खनिके काटै घनै मोरावै।
तव बरदा के दाम सुलावै।।

ऊंख की जड़ से खोदकर काटने और खूब निचोड़कर पेरनेसे ही लाभ होता है। तभी बैलों का दाम भी वसूल होता है।

3. हस्त बरस चित्रा मंडराय।
घर बैठे किसान सुख पाए।।

हस्त में पानी बरसने और चित्रा में बादल मंडराने से(क्योंकि चित्रा की धूप बड़ी विषाक्त होती है) किसान घरबैठे सुख पाते हैं।

4. हथिया पोछि ढोलावै।
घर बैठे गेहूं पावै।।

यदि इस नक्षत्र में थोड़ा पानी भी गिर जाता है तो गेहूं कीपैदावार अच्छी होती है।

5. जब बरखा चित्रा में होय।
सगरी खेती जावै खोय।।

चित्रा नक्षत्र की वर्षा प्राय: सारी खेती नष्ट कर देती है।

6. जो बरसे पुनर्वसु स्वाती।
चरखा चलै न बोलै तांती।
पुनर्वसु और स्वाती नक्षत्र की वर्षा से किसान सुखी रहते हैकि उन्हें और तांत चलाकर जीवन निर्वाह करने की जरूरतनहीं पड़ती।

7. जो कहुं मग्घा बरसै जल।
सब नाजों में होगा फल।।

मघा में पानी बरसने से सब अनाज अच्छी तरह फलते हैं।

8. जब बरसेगा उत्तरा।
नाज न खावै कुत्तरा।।

यदि उत्तरा नक्षत्र बरसेगा तो अन्न इतना अधिक होगा किउसे कुते भी नहीं खाएंगे।

9. दसै असाढ़ी कृष्ण की, मंगल रोहिनी होय।
सस्ता धान बिकाइ हैं, हाथ न छुइहै कोय।।
यदि असाढ़ कृष्ण पक्ष दशमी को मंगलवार और रोहिणीपड़े तो धान इतना सस्ता बिकेगा कि कोई हाथ से भी नछुएगा।
10.असाढ़ मास आठें अंधियारी।
जो निकले बादर जल धारी।।
चन्दा निकले बादर फोड़।
साढ़े तीन मास वर्षा का जोग।।

यदि असाढ़ बदी अष्टमी को अन्धकार छाया हुआ हो औरचन्द्रमा बादलों को फोड़कर निकले तो बड़ी आनन्ददायिनीवर्षा होगी और पृथ्वी पर आनन्द की बाढ़-सी आ जाएगी।

11. असाढ़ मास पूनो दिवस, बादल घेरे चन्द्र।
तो भड्डरी जोसी कहैं, होवे परम अनन्द।।
यदि आसाढ़ी पूर्णिमा को चन्द्रमा बादलों से ढंका रहे तोभड्डरी ज्योतिषी कहते हैं कि उस वर्ष आनन्द ही आनन्दरहेगा।
12.रोहिनी जो बरसै नहीं, बरसे जेठा मूर।
एक बूंद स्वाती पड़ै, लागै तीनिउ नूर।।
यदि रोहिनी में वर्षा न हो पर ज्येष्ठा और मूल नक्षत्र बरसजाए तथा स्वाती नक्षत्र में भी कुछ बूंदे पड़ जाएं तो तीनोंअन्न (जौ, गेहूं, और चना) अच्छा होगा।
जोत संबंधी कहावतें:-
1.गहिर न जोतै बोवै धान।
सो घर कोठिला भरै किसान।।
गहरा न जोतकर धान बोने से उसकी पैदावार खूब होतीहै।

2. गेहूं भवा काहें। असाढ़ के दुइ बाहें।।
गेहूं भवा काहें। सोलह बाहें नौ गाहें।।
गेहूं भवा काहें। सोलह दायं बाहें।।
गेहूं भवा काहें। कातिक के चौबाहें।।

गेहूं पैदावार अच्छी कैसे होती है ? आषाढ़ महीने में दो बांहजोतने से; कुल सोलह बांह करने से और नौ बार हेंगाने से;कातिक में बोवाई करने से पहले चार बार जोतने से।

3. गेहूं बाहें। धान बिदाहें।।

गेहूं की पैदावार अधिक बार जोतने से और धान कीपैदावार विदाहने (धान का बीज बोने के अगले दिन जोतवादेने से,यदि धान के पौधों की रोपाई की जाती है तो विदाहनेका काम नहीं करते, यह काम तभी किया जाता है जबआप खेत में सीधे धान का बीज बोते हैं) से अच्छी होती है।

4. गेहूं मटर सरसी।
और जौ कुरसी।।

गेहूं और मटर बोआई सरस खेत में तथा जौ की बोआईकुरसौ में करने से पैदावार अच्छी होती है।

5. गेहूं गाहा, धान विदाहा।
ऊख गोड़ाई से है आहा।।

जौ-गेहूं कई बांह करने से धान बिदाहने से और ऊख कईबार गोड़ने से इनकी पैदावार अच्छी होती है।

6. गेहूं बाहें, चना दलाये।
धान गाहें, मक्का निराये।
ऊख कसाये।

खूब बांह करने से गेहूं, खोंटने से चना, बार-बार पानी मिलनेसे धान, निराने से मक्का और पानी में छोड़कर बाद में बोनेसे उसकी फसल अच्छी होती है।

घाघ की कहावतें एक-एक मुख से होती हुई दूसरों के जबानपर चढ़ती गई। पीढ़ी दर पीढ़ी ये ग्रामीणों में विस्तारित औरप्रसारित होती रहीं। कुल मिलाकर उनकी रचनाएं पीढ़ीपरंपरा से ही आगे बढ़ीं। महाकवि घाघ के बारे में तो आमलोगों को भले ही बहुत ज्यादा जानकारी नहीं हो लेकिनउनकी रचनाओं को बहुतों को उच्चारित करते सुना जासकता है। आधुनिक काल में इसकी ज्यादा उपयोगिता बढ़ीहै, मौसम, जलवायु द्वारा लगभग सभी क्षेत्र प्रभावित होते हैंखासकर कृषि में इसका विशेष योगदान है, वर्षा, मानसूनएवं जलवायु विभिन्न रूपों में हमारे देश के कृषि उत्पादनएवं अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते इसलिये कृषि मौसमविज्ञान का विस्तृत रूप में अध्ययन करना नितांत उपयोगीहै। मौसम न केवल कृषि को प्रभावित करता है बल्कि दूसरेक्षेत्रों जैसे- वायुयान यातायात, समुद्री यातायात, औद्योगिकक्षेत्र, रेल्वे, मत्स्य पालन को भी प्रभावित करता है इसकेसाथ-साथ प्रेक्षणों द्वारा जो आंकड़े इकट्ठे होते हैं उनकाउपयोग दीर्घकालीन जलवायु परिवर्तन एवं मौसम बदलावके अध्ययन के लिये भी होता है। इन आंकड़ों का उपयोगबांध बनाने, परमाणु बिजली घर बनाने एवं राष्ट्रीय समृद्धिके लिये उपयोग होने वाले विशिष्ट एवं अतिविशिष्ट संस्थानोंके निर्माण के लिये होता है। वर्षा की विस्तृत जानकारीएकत्रित करने के लिये आधुनिक उपकरणों जैसे पूरे देश मेंस्वचलित मौसम केंद्र, स्वचालित वर्षा मापक केंद्र, डाप्लरवेदर राडार को ज्यादा से ज्यादा संस्थानों पर लगाया जारहा है जिससे मौसम की उपयोगिता खासकर कृषि क्षेत्रों मेंबढ़ रही है।

हजारों वर्ष पूर्व हमारे महार्षियों ने 'माता भूमिः पुत्रेय्हमपृथिव्या' संस्कृति को स्थापित किया था अतः हमें वैज्ञानिकविकास एवं प्रकृति में सामंजस्य व तालमेल बिठाना होगा।भारत की लगभग तीन चौथाई आबादी गांव में रहती है,कृषि उनकी मुख्य जीविका है, विश्व मौसम संगठन एवंआकलन के अनुसार कृषि योग भूमि का लगभग 65प्रतिशत भाग बरसात के पानी पर निर्भर करता है। पहलेयह निर्भरता और भी अधिक थी। यह विदित है कि दक्षिणपश्चिम मानसून भारतीय उपमहाद्वीप के लिए एक महानप्राकृतिक देन है। भारत में मानसून के महीनों में हुई बरसातपूरे वर्ष की कुल बरसात का लगभग 80 प्रतिशत होती है।हमारे देश की प्रमुख खरीफ की फसल का उत्पादन इसबरसात पर निर्भर करता है। जब बरसात कम होती है

तोसमूचे देश की सारी व्यवस्थाएं बुरी तरह से प्रभावित होजाती हैं। लेकिन विज्ञान और तकनीकी विकास और हमारीजानकारी को बढ़ाकर इसके बुरे प्रभावों में कमी अवश्यलाई जा सकती है।

निष्कर्षः

प्रकृति को समझो, उसकी अनबूझ पहेलियों को सुलझानेकी कोशिश मानव के विकास की कहानी अनायास ही कहडालती है। विकास की निरंतर चल रही इस प्रक्रिया केदौरान न जाने कितने झंझावात झेल कितनी उफनतीनदियों को पार कर, कितने तूफानों का सामना कर, कितनेबादलों को भेदते हुए मानव आगे बढ़ता गया तो इस आशाके साथ कि कभी न कभी कोई ऐसा चिराग अवश्य हाथलगेगा जिससे मौसम के निरंतर परिवर्तनशील मिजाज कोसमझ कर उनका पूर्वानुमान करने में वह और भी सक्षम होसकेगा।
वर्तमान में मौसम विज्ञान के क्रमिक विकास के आधार परकरीब-करीब सभी मौसम तंत्र की गतिविधियों के बारे मेंजानकारी सटीक होने की स्थिति पर है। भौतिकी औरसांख्यिकी के उपयोग से मौसम पूर्वानुमान आज के संदर्भमें काफी सटीक हो चुका है। हालांकि यह शत-प्रतिशतसटीक परिशुद्ध नहीं है। हम उम्मीद करेंगे कि जिस तरहसूर्य चन्द्रमा और तारों की गतीवीधियों की जानकारी हमसटीक दे सकते हैं, उसी तरह एक दिन मौसम के बारे में भीहम वार्षिक पंचांग प्रकाशित कर सकेंगे।

संदर्भ ग्रंथ:---

1. "घाघ एवं भड्डरी", रामरेश त्रिपाठी, 1931, हिंदुस्तान अकादमी।
2. विभिन्न क्षेत्रों के किसानों एवं ग्रामीणों के साक्षात्कार।